शौचालय बनवाते समय ध्यान दें

1. गड्ढे को 4 फिट गहरा रखा जाय 2. इसका व्यास (बीचो-बीच चौड़ाई) अन्दर से 3 फिट हो।
3. हैण्डपम्प से शौच का गड्ढा कम से कम 10 मीटर दूर हो।

शौचालय कितने साल चलेगा

शौचालय का गड्ढा मात्र 4 फिट गहरा होता है फिर भी 5 आदमी के परिवार के लिए 5 से 6 साल में यह गड्ढा भरता है। एक गड्ढा भरने पर शौचालय के बगल में छूटी हुई जगह पर दूसरा गड्ढा ठीक उसी तरह का बनवाया जाएगा, जिसको पाइप से जोड़कर शौचालय का प्रयोग चालू रखा जाएगा। इस प्रकार यह बराबर काम करता रहेगा।

कार्यक्रम के महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. उच्च अनुदान से न्यून अनुदान की तरफ पहल।
2. माँग आधारित प्रक्रिया।
3. लाभार्थियों को वरीयता और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप तकनीक में सुधार।
4. जनपद स्तर तथा ब्लाक स्तर पर अवस्थापकीय सुविधाओं यथा - उत्पादन केन्द्र। ग्रामीण स्वच्छता सेवा केन्द्रों की स्थापना।
5. सघन प्रचार-प्रसार पर अत्यधिक बल।
6. स्कूल स्वच्छता पर बल।
7. शौचालय, उत्पादन केन्द्रों/स्वच्छता सेवा केन्द्रों की स्थापना के लिए वित्तीय संस्थाओं से संसाधन उपलब्ध कराया जाना।
8. भारत सरकार और राज्य सरकार की ग्राम विकास योजनाओं यथा आई०सी०डी०एस०, इन्दिरा आवास योजना, जवाहर रोजगार योजना के साथ उबरेलकर पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जाना।
9. सहकारी संस्थाओं, महिला समूहों और स्वयं सहायता समूहों को कार्यक्रम से जोड़ा जाना।

विशेष :

शौचालय बनवाने हेतु आवेदन पत्र समीप के स्वच्छता सेवा केन्द्र में अथवा बी०डी०ओ०/ए०डी०ओ० (पंचायत) को जमा करके अंशदान की रसीद प्राप्त कर लें। एक माह में शौचालय न बनने पर सी०डी०ओ०/डी०पी०आर०ओ० से सम्पर्क करें। जनपद के भलुअनी (गड़ेर), सलेमपुर, देवरिया सदर, रूद्रपुर और रामपुर कारखाना में स्वच्छता सेवा केन्द्र स्थापित है तथा बैतालपुर और पथरदेवा में खुलने की प्रक्रिया में हैं। इन सेवा केन्द्रों पर शौचालय निर्माणकर सामग्री सहित स्वच्छता की प्रत्येक सामग्री उपलब्ध रहती है।

भारतीय महिलाओं ने स्वतंत्रता के उपरांत सार्थक जनआंदोलन में भागीदारी करके यह सिद्ध कर दिया है कि वे जिम्मेदार व सजग हैं। चिपको आंदोलन, शराबबंदी आंदोलन व साक्षरता अभियान जैसे सार्थक उद्देश्यों में तत्परता दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पंचायत राज कानूनों के अन्तर्गत महिलाओं की संख्या में वृद्धि एवं उनकी मुस्तैदी के साथ कार्य निष्पादन से अच्छे परिणाम देश के पूरे ग्रामीण समाज के सम्मुख आने लगे हैं।